राजस्थान के संग्रहालय

केन्द्रीय संग्रहालय (अल्बर्ट हॉल) जयपुर

राजस्थान का केन्द्रीय संग्रहालय या अल्बर्ट हॉल म्यूजियम जयपुर शहर के रामनिवास बाग के बाहरी ओर सिटी वॉल के नये द्वार (न्यू गेट) के सामने स्थित है। इसे राजस्थान का प्रथम संग्रहालय (सबसे पुराना) भी कहा जा सकता है। फरवरी, 1876 में वेल्स के राजकुमार अल्बर्ट एडवर्ड (जो बाद में किंग एडवर्ड सप्तम बने) अपनी भारत यात्रा के दौरान जयपुर आये। उनके आने की स्मृति में जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय ने जयपुर में अल्बर्ट हॉल का शिलान्यास 6 फरवरी, 1876 को प्रिंस अल्बर्ट के हाथों करवाया। अल्बर्ट हॉल का डिजाइन एवं निर्माण कार्य जयपुर के सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD) के तत्कालीन निदेशक आर्किटेक्ट सैमुअल स्विंटन जैकब द्वारा 1887 ई. में पूर्ण हुआ तथा इसी समय (1887) सर एडवर्ड बेडफार्ड ने इसका उद्घाटन कर विधिवत रूप से इसे जनता के लिये खोल दिया।

अल्बर्ट हॉल, जयपुर

ध्यातव्य रहे– महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय चाहते थे, कि इसको एक 'टाऊन हॉल' बनाया जाये, परन्तु 'माधोसिंह द्वितीय' ने यह निर्णय लिया कि इसे जयपुर के लिये एक कला का संग्रहालय बनाया जाये।

अल्बर्ट हॉल का निर्माण हिन्दू, मुगल एवं इसाई स्थापत्य शैलियों के सम्मिश्रण पर करवाया गया है। अल्बर्ट हॉल देश की एकमात्र ऐसी इमारत है, जिसमें कई देशों की स्थापत्य शैली का समावेश देखने को मिलता है। अल्बर्ट हॉल आकार में पिरामिड के आकार का एवं बनावट में लंदन के 'ओपेरा हाउस' से समानता रखता है। प्रारम्भ में यह म्यूजियम एक शैक्षणिक संस्थान था जिसमें इतिहास, भूगर्भशास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान और कला-कौशल विषयों पर आधारित सामग्री कई देशों से एकत्रित की गई थी। स्वतंत्रता के पश्चात् इसे राज्य स्तरीय केन्द्रीय संग्रहालय का रूप दिया गया। इसमें सन् 1506 से 1922 तक के जयपुर के राजाओं के चित्र-राज्य चिह्न हैं। इसके अतिरिक्त इस संग्रहालय में कई पुराने चित्र, दरियाँ, हाथी दाँत, कीमती पत्थर, धातुओं और लकड़ी के शिल्प, अस्त्र-शस्त्र, ममी, राजस्थान के विभिन्न वर्गों के कपड़े व गहने, राजस्थान की संगीत व नृत्य प्रदर्शनी, मेहंदी मांडणा गैलेरी, मूर्तियाँ, रंगबिरंगी कई वस्तुएँ देखने को मिलती है। साथ ही हॉल के चारों तरफ बने भित्ति चित्र जैसे- युधिष्ठिर का धूत खेलना, हनुमान द्वारा लंका दहन, राजा मोरध्वज का यज्ञ, चन्दहास, दमयन्ती का स्वयंवर एवं अन्य चित्र। ये चित्रकारियाँ उस समय बसावन, लाल, मुकुन्द और मशकिन जैसे महान चित्रकारों द्वारा की गई थी।

ममी– अल्बर्ट हॉल संग्रहालय का मुख्य आकर्षण 'ममी' है। यह ममी 1880 ई. में जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंह के समय ब्रिटिश सरकार द्वारा मिस्र से मंगवायी गई थी। [कुछ विद्वान ममी को जयपुर लाने का समय 1883 ई. व कुछ 1887 ई. मानते हैं, यदि 1887 ई. को भी सही माना जाये, तब भी उस समय भारत की यह पहली ममी थी।] यह ममी लगभग 332 ई.पू. के आस-पास टोलमाइक युग की महिला है और इसका नाम तूतू है। ये महिला उस समय मिस्र में 'खेम' नामक एक देवता की पूजा करने वाले पुरोहित के परिवार की सदस्य थी। इस महिला की ममी मिस्र के प्राचीन शहर पैनोपोलिस के अखमीन में खुदाई के दौरान मिली। बाद में इसे कैरो म्यूजियम (मिस्र) में रखा गया, जहाँ से इसे जयपुर लाया गया और कुछ समय बाद इसे अल्बर्ट हॉल में आम लोगों के लिये रखा गया। इस ममी की देखभाल विभिन्न रसायनों से होती है, यह काम राज्य पुरातत्व विभाग का केमिकल डिवीजन करता है और ये कार्य मिस्र के कैरो म्यूजियम में एक्सपर्ट्स के निर्देशानुसार होते हैं।

कालीन– अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में एक असाधारण वस्तु कालीन है, जिसमें झरने और फारसी बगीचे के दृश्य को दिखाया गया है। इस कालीन को मिर्जा राजा जयसिंह ने फारस के शाह अब्बास से महंगे दाम पर खरीदा था।

हवामहल राजकीय संग्रहालय, जयपुर

हवामहल संग्रहालय जयपुर की स्थापना 1983 ई. में की गई। इसमें आभानेरी, नरहड़ से प्राप्त जैन तीर्थंकर सुमतिनाथ, सांभर से प्राप्त वामन अवतार की पाषाण प्रतिमाएँ प्रदर्शित है। गणेश्वर, जोधपुर, बैराठ, रैढ़, सांभर आदि से प्राप्त पाषाण व मृण्यमूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। इसे अब अल्बर्ट हॉल में स्थानांतरित कर दिया गया है।

डॉल म्यूजियम, जयपुर

यह संग्रहालय जयपुर शहर के जे.एल.एन. मार्ग पर त्रिमूर्ति सर्किल के पास स्थित मूक-बधिर विद्यालय के प्रांगण में स्थापित है। इसका निर्माण भगवानी बाई शेखसरिया चैरिटी ट्रस्ट, जयपुर द्वारा करवाया गया। इस संग्रहालय में भारत के विभिन्न प्रदेशों एवं 30 से भी अधिक अन्य देशों की गुड़ियाँ/कठपुतलियाँ प्रदर्शित है। यहाँ रखी हर गुड़िया अपने देश-प्रदेश की खासियत बताती है।

प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, जयपुर

प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय जयपुर शहर के रामनिवास बाग स्थित जन्तुआलय में स्थित है। यह संग्रहालय जीव-जन्तुओं, पक्षियों तथा प्राकृतिक संसार की जानकारी देने वाला प्रदेश का एकमात्र व अनोखा संग्रहालय है। इसके निर्माण का श्रेय प्रसिद्ध वन्यजीव विशेषज्ञ पद्मश्री कैलाश साँखला जी को जाता है।

सिटी पैलेस म्यूजियम, जयपुर

सिटी पैलेस जयपुर शहर के मध्य उत्तर-पूर्वी भाग में बना हुआ है। परिसर के अंदर सबसे प्रसिद्ध धरोहरों में दीवान-ए-आम, चन्द्रमहल, मुबारक महल, मुकुट महल, गोविंद देव मंदिर एवं सिटी पैलेस म्यूजियम शामिल है। इस संग्रहालय को **सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय** भी नाम दिया गया है, क्योंकि 1959 में मानसिंह द्वितीय ने ही सिटी पैलेस में इस संग्रहालय की स्थापना की थी। इस संग्रहालय में दीवान-ए-आम की आर्ट गैलेरी तथा मुबारक महल को टैक्सटाइल गैलेरी में रूपांतरित किया गया है। यहाँ **विश्व की सबसे बड़ी झूमर** एवं **दीवान-ए-खास** में **चांदी की दो विशालतम जार**, जो **गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है, प्रदर्शित है।** इस संग्रहालय में जयपुर राजपरिवार का बहुमूल्य संग्रह प्रदर्शित है।

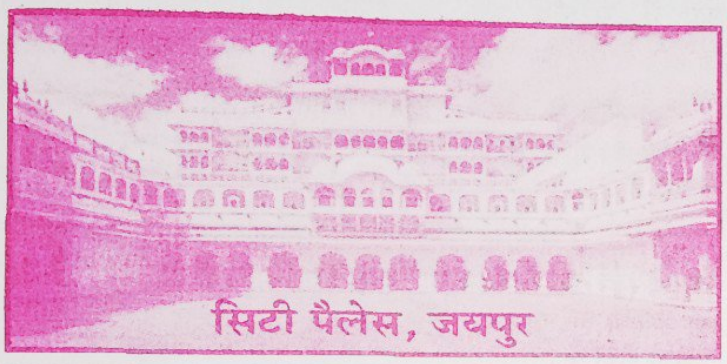
सिटी पैलेस, जयपुर

उम्मेद भवन पैलेस संग्रहालय, जोधपुर

जोधपुर रियासत के **महाराजा उम्मेद सिंह** (1918-1947 ई.) ने 1929 ई. में अकाल विभीषिका से नागरिकों को राहत दिलाने हेतु **छीतर की पहाड़ी** पर विशाल राजभवन **'छीतर पैलेस'** (उम्मेद भवन पैलेस) की नींव रखी एवं इसका निर्माण **1943** में पूरा हुआ। यह भवन **इंडो-डेको स्टाइल** में निर्मित है। इस भवन के इंजीनियर/वास्तुकार **हेनरी वॉगन लैंचेस्टर** थे। वर्तमान में उम्मेद भवन पैलेस के तीन भाग है। एक भाग लग्जरी ताज होटल, दूसरा भाग शाही परिवार के लिये, तीसरा भाग एक संग्रहालय है। इस संग्रहालय के एक कक्ष में हवाई उड़ानों के दौरान प्रयुक्त होने वाले **एयर क्राफ्ट्स** के विभिन्न मॉडल रखे गये हैं। ये एयर क्राफ्ट्स **महाराजा उम्मेद सिंह** से लेकर **महाराजा हनुवंत सिंह** के शासनकाल के दौरान उपयोग में लिये गये थे। इस संग्रहालय में **घड़ियों** का भी अनूठा संग्रहण है।

उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर

सरदार राजकीय संग्रहालय, जोधपुर

यह संग्रहालय जोधपुर के हाइकोर्ट रोड़ पर **उम्मेद पब्लिक गार्डन** के बीच स्थित है। जोधपुर में सन् 1909 में इस संग्रहालय की स्थापना की गई एवं 1936 के इसे जनता के लिये खोला गया। इस संग्रहालय का नाम जोधपुर में तत्कालीन **महाराजा सरदार सिंह** जी के नाम पर पड़ा। इस संग्रहालय में शस्त्र, टैक्सटाइल एवं स्थानीय कला का संग्रहण है।

मेहरानगढ़ संग्रहालय

यह संग्रहालय **मेहरानगढ़ दुर्ग** में अवस्थित है। इस संग्रहालय में विभिन्न आकृतियों की शाही पालकियों के अलावा राठौड़ों की सेना, पोशाक, चित्र और साज-सज्जा के समान सहेज कर रखे गये हैं। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में पहनी जाने वाली **पाग-पगड़ियाँ** भी प्रदर्शित है।

लोकवाद्यों का संग्रहालय, जोधपुर

जोधपुर में स्थित राजस्थान संगीत नाटक अकादमी में लोकवाद्यों का समृद्ध संग्रहालय स्थित है। यहाँ पर जन्तर, रावणहत्था, कमायचा, खोज, खड़ताल, अलगोजा, नड़ आदि प्रमुख लोकवाद्य है।

बागोर की हवेली संग्रहालय, उदयपुर

दिसम्बर, 1997 में **पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र** (जो कि उदयपुर की बागोर हवेली में स्थित है) कार्यालय में एक संग्रहालय की स्थापना की गई। रजवाड़ों में रहन-सहन, वेशभूषा, आमोद-प्रमोद, तीज-त्योहार आदि सांस्कृतिक विरासत को संजोए हुए यह संग्रहालय आकर्षण का केन्द्र है। पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा संचालित इस संग्रहालय मे मेवाड़ घराने की पगड़ियाँ, कलात्मक चौपड़े, बाजोट, तोरण, पाटिया, वाद्य यंत्र, रियासतकालीन हस्तशिल्प, कारीगरी के नमूने, मदिरा की सुराईयाँ, दर्पण आदि संग्रहित किये गये है।

जनजाति संग्रहालय, उदयपुर

इस संग्रहालय की स्थापना उदयपुर में स्थित माणिक्यलाल वर्मा जनजाति शोध संस्थान द्वारा **30 दिसम्बर, 1983** को इसी संस्थान में की गई। इस संग्रहालय को स्थापित करने का उद्देश्य राज्य की जनजातियों की सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था तथा उनकी संस्कृति को संरक्षित एवं प्रदर्शित करना है। इस संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर मेवाड़ का राजचिह्न **'जो दृढ़ राखै धर्म को तिही राखै करतार'** रखा हुआ है। इस संग्रहालय में राजस्थान की विभिन्न **जनजातियों** के वस्त्र, आभूषण, हथियार, चित्र, इष्ट देवता, लोक संस्कृति एवं कला के साथ ही जनजातीय वाद्य यंत्र मांदल, खड़ताल, गोरजा इत्यादि संग्रहित है।

सिटी पैलेस म्यूजियम, उदयपुर

सिटी पैलेस संग्रहालय सिटी पैलेस परिसर का एक हिस्सा है। इसकी स्थापना महाराणा अमरसिंह प्रथम द्वारा की गई थी। इस संग्रहालय में हल्दीघाटी कक्ष, चेतक कक्ष एवं प्रताप कक्ष है। इसमें हल्दीघाटी युद्ध के दृश्य प्रदर्शित हैं, जिनमें मानसिंह के हाथी पर घोड़ा चढ़ाकर भाला मारने वाला दृश्य प्रमुख है। भामाशाह द्वारा प्रताप को भेंट की गई धन की थैली का चित्र भी प्रदर्शित है। इसके अलावा राणा प्रताप से संबंधित भाले, तलवार, ढ़ाल इत्यादि भी दर्शनीय है।

सिटी पैलेस, उदयपुर

राजकीय प्रताप संग्रहालय, उदयपुर

महाराणा शम्भूसिंह (1861–74 ई.) के शासनकाल में कर्नल हैचिन्सन की सलाह पर उदयपुर रियासत में तवारीख महकमा (इतिहास विभाग) स्थापित किया गया। इसी दौरान 1873 ई. में उदयपुर संग्रहालय की स्थापना का काम आरम्भ हुआ। 1968 ई में यह संग्रहालय सज्जन निवास बाग से सिटी पैलेस के कर्ण निवास या हिसाब दफ्तर महल में स्थानांतरित किया गया और इसका नाम प्रताप संग्रहालय रखा गया। इस संग्रहालय में बालकों की रुचि की सामग्री रखी गई, जिसमें स्टफ किया गया कंगारु, बंदर, सफेद सांभर, कस्तूरी हिरण और घड़ियाल आदि प्रमुख है। इसके अलावा मेवाड़ी धनाई के नमूने, मेवाड़ी पगड़ियाँ, साफे, भीलों के आभूषण, शहजादा खुर्रम की पगड़ी, हाथीदांत, अस्त्र-शस्त्र, शिलालेख (घोसुण्डी शिलालेख का एक खण्ड इस संग्रहालय में सुरक्षित है) और लगभग 8000 लघु चित्र इन लघु चित्रों में रसिकप्रिया (चित्रकार साहिबद्दीन का), पंचतंत्र, मुल्ला दो प्याजा, कलीला-दमना के लघु चित्र भी प्रदर्शित है।

राजकीय संग्रहालय आहड़, उदयपुर

दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान के उदयपुर नगर से लगभग 2-3 मील दूरी पर स्थित आहड़ कस्बे से ताम्र-पाषाणकालीन संस्कृति प्राप्त हुई है। इस उत्खनन से प्राप्त सामग्रियों के प्रदर्शन के लिये आहड़ संग्रहालय की स्थापना की गई है। इस संग्रहालय में लगभग 4000 वर्ष पुरानी सभ्यता की सामग्रियों का प्रदर्शन है। यह राज्य का स्थानीय संग्रहालय है, जो राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा संचालित है।

गंगा गोल्डन जुबली संग्रहालय, बीकानेर

गंगा गोल्डन जुबली संग्रहालय बीकानेर में लालगढ़ पैलेस के पास स्थित है। यह संग्रहालय इटली के विद्वान डॉ. एल. पी. टैस्सीटोरी द्वारा स्थापित किया गया एवं इसका उद्घाटन 5 नवम्बर, 1937 को महाराज गंगासिंह के समय तत्कालीन वायसराय लार्ड लिनलिथगो द्वारा किया गया। यह बीकानेर का राजकीय संग्रहालय है, जो कि वर्तमान में राजस्थान सरकार द्वारा संचालित है। इस संग्रहालय में प्राचीन हड़प्पा सभ्यता के आर्ट वर्क, टेराकोटा बर्तन, हथियार, पेंटिंग्स, मूर्तियाँ और सिक्के प्रदर्शित हैं। इस संग्रहालय को विभिन्न हिस्सों में विभाजित किया गया है, जिन्हें महाराज गंगा सिंह मेमोरियल, स्थानीय कला और शिल्प, इतिहास, मूर्तिकला, टेराकोटा और कांसे, शस्त्रागार, लघु चित्र, लोककला आदि नाम दिये गये हैं। इस संग्रहालय में पल्लू से प्राप्त जैन सरस्वती की प्रतिमा एवं ए. एच. मूलर के चित्र भी प्रदर्शित है।

करणी म्यूजियम, बीकानेर

बीकानेर में जूनागढ़ किला स्थित है। इसी जूनागढ़ किले के गंगा निवास में करणी संग्रहालय स्थित है। इस संग्रहालय में बीकानेर के शासकों के जीवन से जुड़ी घटनाएँ, प्राचीन अस्त्र-शस्त्र एवं राठौड़ वंश से संबंधित सामग्रियों को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त प्रथम विश्व युद्ध में काम आने वाले हवाई जहाजों के नमूने, बेल्जियम का आइना एवं जयचन्द द्वारा बनवाया गया चन्दन का सिंहासन भी दर्शाया गया है।

जूनागढ़ किला, बीकानेर

शार्दूल म्यूजियम, बीकानेर

यह संग्रहालय बीकानेर में लालगढ़ पैलेस की पहली मंजिल पर स्थित है। यह संग्रहालय 1972 में स्थापित किया गया था। इस संग्रहालय में पुरानी तस्वीरें, शिकार ट्रॉफियाँ, जॉर्जियार्ड चित्रों और कलाकृतियों की बड़ी प्रदर्शनी है, यह कला संग्रहालय गंगा सिंह, शार्दूल सिंह और करणी सिंह सहित बीकानेर के सफल राजाओं को समर्पित है। इसमें विश्व के विभिन्न देशों के सिक्कों का संग्रह भी रखा गया है।

लाल गढ़ पैलेस, बीकानेर

जैसलमेर लोकथा संग्रहालय, जैसलमेर

यह संग्रहालय गढ़सीसर झील के तट पर स्थित है। यह एन. के. शर्मा द्वारा 1984 में स्थापित किया गया था। यह संग्रहालय जैसलमेर की संस्कृति और विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। संग्रहालय में छः वर्ग है, जो आभूषण, फोटो, केशशैली और आभूषण का एक दुर्लभ संग्रह प्रदर्शित करते हैं।

राजकीय संग्रहालय, जैसलमेर

जैसलमेर में राजकीय संग्रहालय की आधारशिला 5 दिसम्बर, 1979 को रखी गई और 14 फरवरी, 1984 को विधिवत् उद्घाटन करवाकर जन-साधारण के लिये खोल दिया गया। संग्रहालय में काष्ठ-जीवाश्म, पाषाणकालीन हथियार, शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के, परिधान, जैसलमेर की पाषाण से निर्मित कलाकृतियाँ, हस्तशिल्प तथा इस क्षेत्र के स्मारकों, स्थलों और पर्यटन स्थलों की पुरा सामग्री प्रदर्शित की गई है। ये सभी वस्तुएँ यह सिद्ध करती है, कि इस संग्रहालय में सर्वाधिक प्राचीन वस्तुओं का संग्रह है।

वॉर म्यूजियम (युद्ध संग्रहालय), जैसलमेर

यह संग्रहालय जैसलमेर जिला मुख्यालय से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर जोधपुर-बीकानेर मार्ग पर अवस्थित है। यह संग्रहालय 24 अगस्त, 2015 को शुरू किया गया, जिसका उद्घाटन सेना की दक्षिणी कमान के तत्कालीन मेजर जनरल अशोक सिंह ने किया था। संग्रहालय में भारतीय सेना के अदम्य साहस, सैनिकों की व्यक्तिगत वीरता और उनके द्वारा दिये गये चरम बलिदान की गौरव गाथा को बेहतरीन ढंग से संजोया गया है। इस संग्रहालय में पाकिस्तान के खिलाफ वर्ष 1965 और 1971-72 के युद्धों में प्राप्त विजय का गाथा प्रदर्शन भी है, इस संग्रहालय के परिसर में विभिन्न युद्धों में इस्तेमाल टैंक, विमान और सैन्य वाहन भी प्रदर्शित है।

राजपूताना म्यूजियम, अजमेर

मैगजीन फोर्ट

यह संग्रहालय अजमेर के ऐतिहासिक दुर्ग 'अकबर का किला' (मैग्जीन) में स्थित है। यह अजमेर का राजकीय संग्रहालय है, जो 'राजपूताना म्यूजियम' के नाम से स्थापित है। इस संग्रहालय को लार्ड कर्जन एवं भारतीय पुरातत्व विभाग के तत्कालीन निदेशक सर जॉन मार्शल की पहल के तहत 19 अक्टूबर, 1908 ई. को स्थापित किया गया और इसका उद्घाटन एजेन्ट टू गवर्नर जनरल (AGG) कॉल्विन द्वारा किया गया। बाद में इसके पहले अधीक्षक डॉ. ओझा द्वारा प्रदर्शनी के माध्यम से क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत की ओर लोगों का ध्यान केन्द्रित करने के उद्देश्य से विकसित किया गया। इस संग्रहालय में मुख्य रूप से मूर्तियाँ, शिलालेख, ताम्रपत्र, लघुचित्र, अस्त्र-शस्त्र, कवच, उत्खनन से प्राप्त सामग्री, राजपूतकालीन वेशभूषा, धातु प्रतिमाएँ, मृण्मय प्रतिमाएँ और कला एवं शिल्प की वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया।

राजकीय संग्रहालय, कोटा

यह संग्रहालय कोटा में किशोर सागर झील के निकट स्थित बृज विलास पैलेस के अंदर बना हुआ है। डॉ. मथुरालाल के प्रयासों से कोटा संग्रहालय की स्थापना 1946 में की गई थी। इस संग्रहालय में मध्यपाषाणकालीन पाषाण उपकरण, बड़वा से प्राप्त तीसरी शताब्दी के यूप स्तम्भ, हाड़ौती की प्रतिमायें, आठवीं शताब्दी की त्रिभंग मुद्रा में सुर सुंदरी एवं शेषशायी विष्णु, 5वीं शताब्दी की झालरी वादक, 15वीं से 19वीं शताब्दी के ग्रन्थ (वल्लभोत्सव चन्द्रिका, गीता, पंचरत्न, कल्पसूत्र, विष्णु सहस्त्रनामा इत्यादि), अस्त्र-शस्त्र, प्राचीन एवं मध्यकालीन सिक्के, शिलालेख एवं हाड़ौती क्षेत्र के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित इतिहास की झांकी प्रदर्शित है। मूर्तियों में से बरोली से लाई गई प्रतिमा सबसे अविश्वसनीय है।

राव माधोसिंह ट्रस्ट संग्रहालय, कोटा

राव माधोसिंह ट्रस्ट संग्रहालय की स्थापना 30 मार्च, 1970 को कोटा के गढ़ परिसर महलों में की गई। संग्रहालय में शस्त्र, राजसी वस्तुएँ, मरे वन्य जीवों को सुरक्षित रखा गया है। इस संग्रहालय को स्थापित करने का उद्देश्य कोटा एवं हाड़ौती क्षेत्रों की कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित एवं प्रदर्शित करना है।

राजकीय संग्रहालय, भरतपुर

यह संग्रहालय भरतपुर के लोहागढ़ किले के परिसर के अंदर स्थित है। पहले ये संग्रहालय एक बहुत बड़ा भवन था, जिसका नाम कचहरी कलां था। कचहरी कलां भरतपुर जिले के महान् शासकों का प्रशासनिक खंड था। कचहरी कलां को 1944 ई. में महाराज बृजेन्द्र सिंह ने राजकीय संग्रहालय में बदल दिया गया। यह संग्रहालय प्राचीन मूर्तियों, चित्रों, सिक्कों, शिलालेखों, प्राणी नमूनों, सजावटी कला वस्तुओं और जाट शासकों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले हथियारों का दुर्लभ संचयन प्रस्तुत करता है। इस संग्रहालय में कुषाणकालीन एक मुखी शिवलिंग स्थापित है, जिसके शीर्ष पर जटा के स्थान पर पगड़ी दिखाई देती है। साथ ही नोह से प्राप्त कुषाणकालीन बोधिसत्व प्रतिमा, कामां से प्राप्त गुप्तोत्तरकालीन शिव-पार्वती की प्रतिमा भी संग्रहित है। राजकीय संग्रहालय भरतपुर में संग्रहित एवं प्रदर्शित सामग्री इस क्षेत्र की कला, संस्कृति एवं इतिहास के बारे में जानकारी देती है।

लोक संस्कृति शोध संस्थान, चुरू

चुरू के मुख्य बाजार से सटी हवेलियों के बीच पोद्दार हवेली में लोक संस्कृति शोध संस्थान नगरश्री, चुरू का स्थाई भवन है। इस संग्रहालय की स्थापना चुरू में 1964 में रामनवमी के दिन प्रसिद्ध इतिहासकार श्री गोविन्द अग्रवाल ने अपने भाई सुबोध कुमार

अग्रवाल के सहयोग से की। यहाँ माडंग, पल्लू, कालीबंगा, रंगमहल एवं सौंथी से प्राप्त हजारों वर्षों पुरानी पुरातात्विक सामग्री मौजूद है। साथ ही प्राचीन मूर्तियों, सिक्कों, ताड़पात्रीय प्रतियों, हस्तलिखित पुस्तकों, बहियों, दस्तावेजों आदि का भी संग्रह है। इस संग्रहालय में शेखावाटी एवं बीकानेर क्षेत्र की एक सजीव लोक झांकी देखने को मिलती है। वर्तमान में 'राजस्थानी लोक कथा कोष' नामक प्रकाशन का कार्य भी इस संस्थान द्वारा किया जाता है।

कालीबंगा संग्रहालय, हनुमानगढ़

श्री अमलानंद घोष ने सन् 1952 में पहली बार कालीबंगा की पहचान सिंधु घाटी सभ्यता के एक स्थल के रूप में की। फिर यहाँ एक उत्खनन कार्य बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर द्वारा 1961 से 1969 तक किया गया। इन उत्खननों से प्राप्त पुरावशेषों (जैसे- मृद्भाण्ड, हाथी दाँत, धातु पत्थरों के मनके, खिलौने, औजार, शस्त्र) को सुरक्षित रखने के लिये 1985-86 में कालीबंगा में संग्रहालय स्थापित किया गया। पुरातात्विक सामग्री के साथ ही उत्खनन के विभिन्न चरणों के चित्र, जिनमें जुते हुये खेत का चित्र, कब्रिस्तान, नगर योजना, परकोटे आदि के चित्र भी चित्रित है।

राजकीय संग्रहालय, अलवर

यह संग्रहालय अलवर के सिटी पैलेस (विनय विलास महल) के अदंर स्थित है। इसे 'अलवर संग्रहालय' के नाम से भी जाना जाता है। इस संग्रहालय की स्थापना अलवर राज्य के अंतिम शासक तेजसिंह के शासनकाल में मेजर हार्वे के प्रयासों से नवम्बर, 1940 में की गई। इस संग्रहालय में प्राचीन शाही हथियार, फारसी और संस्कृत पांडुलिपियों, संगीत वाद्ययंत्रों, बीढर काम, भरवां पशु, लघुचित्र, मिट्टी के बर्तन संग्रहित है। इस संग्रहालय में तुर्की में लिखी गई बाबर की आत्मकथा की मूल प्रतिलिपी वाकयात-ए-बाबरी भी प्रदर्शित है। **इसके अतिरिक्त एक छोटी सी डिबिया में केवल एक इंच चौड़ी और एक इंच लम्बी कुरान प्रदर्शित है।**

राजकीय संग्रहालय, चित्तौड़गढ़

इस संग्रहालय की स्थापना सन् 1968 में चित्तौड़गढ़ के फतह प्रकाश महल में की गई थी। इसे 'चित्तौड़गढ़ संग्रहालय' के नाम से भी जानते हैं। इस संग्रहालय में पाषाण एवं धातु प्रतिमाएँ, मृण्मय सामग्री, लघुचित्र, आभूषण, काष्ठकृतियाँ, तेलचित्र, सिक्के, मीरा से संबंधित चित्र प्रदर्शित है। इस संग्रहालय को स्थापित करने का उद्देश्य चित्तौड़गढ़ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत और पुरा सामग्री का संरक्षण और प्रदर्शन है।

राजकीय संग्रहालय, झालावाड़

झालावाड़ शहर के गढ़ पैलेस के निकट स्थित झालावाड़ पुरातत्व एवं संग्रहालय की स्थापना 1 जून, 1915 को तत्कालीन झालावाड़ नरेश राजराणा भवानी सिंह ने की थी। **यह हाड़ौती संभाग का पहला संग्रहालय** था। दुर्लभ पांडुलिपि, सुंदर मूर्तियाँ, पुराने सिक्के और चित्र इस संग्रहालय के मुख्य आकर्षण है। इस संग्रहालय में विभिन्न खुदाईयों से मिली हिन्दू भगवान अर्द्धनारिश्वर नटराज की मूर्ति भी है, जिसे मास्को में फेस्टिवल ऑफ इंडिया समारोह में प्रदर्शित किया गया था। इसके अलावा लाल पत्थर से निर्मित 10वीं शताब्दी की चतुर्मुखी ब्रह्मा की प्रतिमा, लकुलीश प्रतिमा, नरवाराह, चामुण्डा, चक्रपुरुष, सूर्य, बटुक, भैरव, सुर-सुंदरी प्रतिमाएँ महत्त्वपूर्ण है। हाड़ौती क्षेत्र के वैष्णव, शैव, शाक्त, सौर, बौद्ध और जैन आदि विभिन्न सम्प्रदायों की प्रतिमाएँ भी उपलब्ध है। इस संग्रहालय की स्थापना का उद्देश्य हाड़ौती क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना है।

श्री बांगड राजकीय संग्रहालय, पाली

यह संग्रहालय पाली के पुराने बस स्टैण्ड के पास स्थित है। इस संग्रहालय की स्थापना श्री 'बांगड जुआर' के नाम पर 1983 ई. में की गई। इस संग्रहालय में पाषाणकालीन उपकरण, लघु पाषाण प्रतिमाएँ, 8-9वीं शताब्दी की जीवन्त स्वामी की दुर्लभ कांस्य प्रतिमा, सुगाली माता की काली प्रतिमा प्रदर्शित है।

सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय, हनुमानगढ़

यह संग्रहालय हनुमानगढ़ जिले के संगरिया कस्बे में स्वामी केशवानंद द्वारा 1938 में स्थापित किया गया। इस संग्रहालय में एक विशाल कमंडल, महाराजा रणजीतसिंह के दरबार और चैम्बर ऑफ प्रिंसेज की 14 फरवरी, 1921 की फोटो दर्शनीय है। इस संग्रहालय का अवलोकन प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गाँधी, चौधरी चरण सिंह एवं अनेक अन्य जननेताओं ने भी किया।

बिड़ला तकनीकी म्यूजियम

1929 में घनश्याम दास बिड़ला ने राजस्थान के झुंझुनूं जिले के पिलानी में बिड़ला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (Bits) की स्थापना एक इंटर कॉलेज के रूप में की थी। 1954 में इसी संस्थान के परिसर में बिड़ला तकनीकी म्यूजियम की स्थापना की गई, जो कि देश का प्रथम उद्योग एवं तकनीकी म्यूजियम है। कोयले की खानों का प्रदर्शन प्रमुख है जो एशिया के अन्यत्र संग्रहालयों में संभवत: नहीं मिलता है।

शेखावाटी संग्रहालय, सीकर

इस संग्रहालय की स्थापना 2006 ई. में की गई थी। इस संग्रहालय की स्थापना शेखावाटी क्षेत्र की लोक कलाओं व लोक संपदाओं के संरक्षण के लिए की गई है।

मीरा संग्रहालय, उदयपुर

उदयपुर में प्रदेश के पहले मीरा संग्रहालय की स्थापना 2011 ई. में की गई। इसमें मीरा से जुड़ी ऐतिहासिक एवं साहित्यिक साक्ष्य सामग्री के साथ ही विभिन्न रोचक अंशों से जुड़ी झांकियों का संग्रह है।